



## International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2017; 3(3): 124-126

© 2017 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 24-03-2017

Accepted: 25-04-2017

### रामावतार शर्मा

शौधार्थी—महर्षि दयानन्द सरस्वती  
विश्वविद्यालय, अजमेर—राजस्थान  
अध्यापक— राजकीय प्रवेशिका  
संस्कृत विद्यालय, बालापुरा—मालपुरा,  
टोंक—राजस्थान  
स्टडीप्लेस— राजकीय सेमुमा कन्या  
महाविद्यालय, भीलवाडा राजस्थान,  
भारत

### Correspondence

#### रामावतार शर्मा

शौधार्थी—महर्षि दयानन्द सरस्वती  
विश्वविद्यालय, अजमेर—राजस्थान  
अध्यापक— राजकीय प्रवेशिका  
संस्कृत विद्यालय, बालापुरा—मालपुरा,  
टोंक—राजस्थान  
स्टडीप्लेस— राजकीय सेमुमा कन्या  
महाविद्यालय, भीलवाडा राजस्थान,  
भारत

## सप्तर्षि स्मृति ग्रन्थों में शुचिता: समग्र अध्ययन

### रामावतार शर्मा

#### प्रस्तावना

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

सनातन जीवन पद्धति में प्रत्येक अनुष्ठानादि शुभ कार्य का प्रारम्भ ही उपरोक्त मंत्र से होता है, जो वैदिक संस्कृति में प्राचीन जीवन पद्धति की मुख्य आधारशिला आभ्यन्तर तथा बाह्य शुचि के महत्त्व को स्पष्ट करता है। याज्ञवल्क्य के मत में श्रुति, स्मृति, सदाचार, आत्मरुचि व्यवहार तथा सम्यक संकल्प ये पांच धर्म के उपादान हैं।

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियात्मनः ।

सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम् ॥ याज्ञ । 1 । 7 ॥

इस प्रकार स्मृतिशास्त्र धर्मशास्त्र है। धर्म शास्त्रों में शुचिता को धर्म के दश लक्षणों में स्थान दिया गया है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥ मनु । 6 । 92 ॥

स्मृतिशास्त्रों के प्रतिपाद्य धर्मोपदेश, सामाजिक संरचना, राजधर्म, स्त्रीधर्म, कर्मों की शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त, न्याय व्यवस्था, तथा आचार—व्यवहार है, किन्तु इन सब में शुचिता को प्रथम स्थान दिया गया है। जिस प्रकार ईश्वर की प्राप्ति के लिए पाप कर्मों को त्यागना अनिवार्य है, उसी प्रकार उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए अस्वच्छता को त्यागना आवश्यक है। स्मृतियों में आचार—व्यवहार के लिए शुचिता का जो महत्त्व बताया गया है वह आज भी उत्तम स्वास्थ्य के लिए मानव हृदय की प्रेरणा का स्रोत है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए योग का महत्त्व सर्वमान्य है। बिना शुचिता के योग पूर्ण नहीं हो सकता है। अष्टांगयोग के यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि ये आठ अंग हैं। नियम भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला है जो पांच प्रकार का है—शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वराराधना। इस प्रकार बिना शुचिता के सुखी जीवन और पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्ति नहीं हो सकती है।

#### सप्तर्षि

मन्वन्तर भेद से सप्त ऋषियों के नामों में भी भेद प्राप्त होता है। लोक में विख्यात तथा उपलब्ध कृतित्व के आधार पर डॉ. प्रभाकर शास्त्री ने "सप्तर्षि—स्मृति—समुच्चयः" में प्रवर्तमान वैवस्वतमन्वन्तर के ऋषियों को सप्तर्षियों के रूप में प्रस्तुत किया है। इनका नाम क्रम भी डॉ. शास्त्री ने मार्कण्डेय पुराणोक्त क्रमानुसार प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है— अत्रि, वशिष्ठ, काश्यप, गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र तथा पुलस्त्यः

#### वर्णन —

स्मृति शास्त्रों शुचिता की अवधारणा आधुनिक काल की भांति भौतिक स्वच्छता तक सीमित न होकर आभ्यन्तर और बाह्य शुचि के रूप में व्यापक अर्थ में स्वीकार किया गया है। स्मृतिशास्त्रों में समाज के संतुलित संगठन और मानव व्यवहार को स्वच्छन्द होने से रोकने के लिए अन्तःकरण की शुद्धि और बाह्य शुद्धि दोनों को समान रूप से अंगीकृत किया है। मनु के मत में शरीर की शुद्धि जल से मन की

शुद्धि सत्य से जीवात्मा की शुद्धि विद्या और तप से तथा बुद्धि की शुद्धि ज्ञान से होती है।

अदिभर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति ।  
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिज्ञानेन शुद्धयति ॥ मनु। 5।  
135 ॥

इस प्रकार स्मृतिशास्त्रों में मानव कल्याणार्थ निर्देशित धर्मोपदेश व सिद्धान्त धरातल पर अत्यंत ही मौलिक, प्रायोगिक तथा व्यवहारिक है।

### शौचक्रिया

शौचक्रिया की विधि, स्थान व उचित समय का स्मृतिशास्त्रों में विस्तार से विवेचन किया गया है। सभी ऋषियों के मत में दिन का पूर्वार्द्ध भाग या ब्रह्म मुहूर्त को मूत्रपुरीषकर्म का श्रेष्ठ समय स्वीकार किया है।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्मतत्त्वार्थमीश्वरम् ।  
विचिन्त्याथ गृहाद्गत्वा देशे दक्षिणपश्चिमे ॥ भरद्वाज। 3।  
3 ॥

भरद्वाज मतानुसार डाब से भिन्न तृण को भूमी पर डाल कर रात्रि में दक्षिणाभिमुख होकर ग्राम से बाहर विष्णुत्र त्यागना चाहिए।

समे रहसि भूभागे दर्भतरतृणास्तृते ।  
विसृजेन्मलमूत्रे तु रात्रौ चेद् दक्षिणाभिमुखः ॥ भरद्वाज।  
3। 8 ॥

देवालय, देवतडाग, श्मशान, पर्वत, नदीतट, छायातरु की मूल में, भस्म, ढेला, सस्य युक्त खेत, आदि स्थानों पर शौचक्रिया नहीं करनी चाहिए।

देवालयमखस्थानश्मशानाचलदारिषु ।  
नदीकाश्चित्तीतरतरुच्छायामूलभस्मसु ॥ भरद्वाज। 3। 9 ॥  
लोष्टसस्यकपरुवभ्रपराग बहुलीकृते ।  
न त्यजेन्मलमूत्रं तु स्थानेष्वेतेषु बुद्धिमान् ॥ भरद्वाज। 3।  
10 ॥

विश्वामित्र ने ग्राम से एक सौ धनुष की दूरी पर दक्षिण में कमिक छः सोपानों में शौचविधि का विधान किया है— शिरोवेषं, निवीतं, दिग्दर्शनं, अन्तर्धानं, मौनं और पुरीषकर्म।

अथोत्थाय बर्हिगत्वा विष्णुमूत्रादि त्यजेद्बहिः ॥ विश्वामित्र।  
1। 46 ॥  
ग्रामाद्दक्षिणभागे शतधन्वन्तरावधि ।  
देवाश्च ऋषयश्चैव गणनाथाश्च योगिनः ॥ विश्वामित्र। 1।  
47 ॥  
गच्छन्तु देवता सर्वा अत्र शौचं करोम्यहम् ।  
प्रथमं च शिरोवेषं निवीतं च द्वितीयकम् ॥ विश्वामित्र। 1।  
48 ॥  
दिग्दर्शनं तृतीयं स्यात् अन्तर्धानं चतुर्थकं ।  
मौनन्तु पंचकं ज्ञेयं पुरीषं षयठमेव च ॥ विश्वामित्र। 1।  
49 ॥

शौचक्रिया पश्चात् हस्त प्रक्षालन के लिए वल्मीकीमृदा, मूषकादि के बिल की, शौचकर्मस्थल की, मार्ग की, आम्रादि वृक्षों की जड़ों की मृदा के निषेध में प्रायः सभी ऋषि एक मत है।

### दन्तधावन

दन्तधावन की विधि, समय, तिथि, वृक्षों की स्वीकृत शाखा, दन्तधावन में वर्जित शाखाएं और स्थलों का स्मृतिशास्त्रों में विस्तृत विवेचन उत्तम स्वास्थ्य के लिए दांतों के विशेष महत्त्व को प्रस्तुत करता है। भरद्वाज ने दन्तधावन का उचित समय शौचाचमन के पश्चात् और स्नान से पूर्व बताया है।

शौचाचमनं दन्तधावनं स्नपनं तत ॥ भरद्वाज। 1। 14 ॥

देवालय, गौशाला, श्मशान, जलमध्य, यज्ञस्थल, शौचस्थल आदि स्थानों पर दन्तधावन वर्जित है।

भरद्वाज ने प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, और पूर्णिमा को तथा विश्वामित्र ने एकादशी को व अंगार, बालुका, ईट, ढेला और अंगुली के नाखून से दन्तधावन का निषेध किया है।

अर्क, अशोक, अपामार्ग, आम्र, कोल, ककुभ, करंज, कदम्ब, बदरी, बिल्व, निम्ब, जामुन, पूग, चम्पक, शिरीष, दाडिम, आदि वृक्षों की शाखा को दन्तधावन के लिए श्रेष्ठ माना गया है।

अशोक मधुकप्लाक्षविल्वाकल प्रियंगवः ।  
जम्बुकदम्बश्यामाकबदरीपूगम्पकाः ॥ भरद्वाज। 4। 7 ॥  
खदिरश्चकरंजश्च कदम्बश्च वटस्तथा ।  
वेणुश्चतितेडीप्लक्षा वाग्रनिम्बे तथैव च ।  
अपामार्गश्च बिल्वश्च अर्कश्चौदुम्बरस्तथा ॥ विश्वामित्रः ॥  
1। 61-62 ॥

### स्नान

अत्रि ने शरीर दूषित करने वाले द्वादश मलों उल्लेख किया है। आचार्य राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने "धर्म शास्त्र का इतिहास" धर्मद्रुम— चौखम्भा विद्याभवन के पृ सं 172 पर वृहदपरासरस्मृति का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया है कि शरीर के नव छिद्रों से दिन—रात निकलने वाले श्वासों से अत्यंत मलिन शरीर और मन की शुद्धि स्नान से होती है।

वसाशुकमसुंमज्जामूत्रविट्कर्णविण्णखाः ।  
श्लेष्मास्थिदूषिकाः स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः ॥  
अत्रिसंहिता। 9। 31 ॥  
अत्यंतमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः ।  
स्त्रवत्येष दिवारात्रौ प्रातःस्नानेन शुद्धयति ॥ वृह परासर।  
2। 95 ॥  
विश्वामित्र ने स्नान उचित समय अरुणोदय के समय उषाकाल माना है।  
स्नानं कुर्यादुषःकाले आत्मार्थमरुणोदये ॥ विश्वामित्र। 4।  
14 ॥

भरद्वाज ने ब्राह्मणों के लिए सप्तविध स्नान का विधान कहा है। विश्वामित्र ने शिर से आजानुपाद पर्यन्त चतुर्विध स्नान का विधान बताया है तथा मन्त्र स्नान को मन की निर्मलता के लिए आवश्यक माना है।

मन्त्रस्नानं विना विप्रो जल स्नानं करोति यः ।  
मनोनिर्मलता तस्य नास्ति हि श्रुति चोदितम् ॥ विश्वामित्र।  
1। 76 ॥

स्नान का हिन्दू संस्कृति में अत्यधिक महत्त्व है। विविध पर्वों पर तथा विविध तीर्थों में भी स्नान का महत्त्व बताया गया है।

### विविध शुद्धि

स्मृतिशास्त्रों में व्यक्तिगत शुचिता के अतिरिक्त गृहशुद्धि, भूशुद्धि, मार्ग की शुद्धि, पात्रशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, सूतकशुद्धि, पापकर्मा के

निवारण हेतु प्रायश्चित्त, भक्ष्याभक्ष्यशुद्धि का विस्तृत विवरण दिया गया है।

### निष्कर्ष

पुराणमित्येव न साधु न चापि काव्यं नवमित्यवधम्:  
सन्तः परीक्ष्यान्तरद्धजन्ते मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः ॥

वर्तमान में गुण-दोष की परीक्षा किये बिना प्राचीन प्रथाओं का त्याग प्रतिष्ठा और आधुनिकता का प्रतीक बन गया है। कोई भी व्यवहार प्राचीन या नवीन होने मात्र से अच्छा या बुरा नहीं होता है। आज हमें हमारे पूर्वजों की गौरवशाली परम्पराओं रूपी धरोहर को समझने और सहेजने की आवश्यकता है। इस अमूल्य धरोहर को समझ कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने सार्वजनिक जीवन में सत्य और स्वच्छता का प्रयोग किया जिसके शुभ परिणामों का विश्व आज भी ऋणी है। भारत सरकार ने समय रहते स्वच्छता के महत्त्व समझा और इसे आंदोलन का रूप दिया निकट भविष्य में सम्पूर्ण विश्व इसका ऋणी होगा। स्मृतिशास्त्र पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु सदैव आचार और व्यवहार में शुचिता के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

### सन्दर्भ सूची

1. पण्डित भट्ट रामेश्वर- मनुस्मृति- चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान- 38 यू ए जवाहर नगर दिल्ली।
2. डॉ. राय गंगाधर- याज्ञवल्क्यस्मृति- चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान- 38 यू ए जवाहर नगर दिल्ली।
3. डॉ. शास्त्री प्रभाकर - सप्तर्षि-स्मृति-समुच्चयः भाग- 1 रचना प्रकाशन 57 नाटाणी भवन जयपुर।
4. डॉ. शास्त्री प्रभाकर - सप्तर्षि- स्मृति- समुच्चयः भाग-2 रचना प्रकाशन 57 नाटाणी भवन जयपुर।
5. डॉ. पाण्डेय उमेशचन्द्र- गौतमधर्मसूत्राणि- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी तृतीय संस्करण वि सं 2050।
6. डॉ. पाण्डेय उमेशचन्द्र- बौधायन- धर्मसूत्रम्- चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी पुनर्मुद्रित संस्करण वि सं 2065।
7. राजवैद्य शास्त्री रवीदत्त- धर्मसिन्धु- चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
8. आचार्य पाण्डेय राजेन्द्र प्रसाद- धर्मशास्त्र का इतिहास "धर्मद्रुम"- चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।